DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part — I
Subject — Sanskrit
Paper — I

5×3 = 15 Marks

कारक सूत्र-व्याख्या

25. वारणार्थानामीप्सितः (1/4/27)

किसी को स्वाभाविक प्रवृत्ति या इच्छा से उसे हटाना- उसकी सहज प्रवृत्ति में बाधा या रुकावट डालना - ही 'वारण' (मना करना) है। जिन धातुओं का अर्थ 'वारण' होता है उनके प्रयोग में अभीष्ट वस्तु से किसी व्यक्ति को दूर रखा जाये या बचाया जाये उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथा — यवेभ्यो गाँ वारयति (गाय को यवों से हटाता है) — यहाँ गाय जौ चर रही है। जौ चरने की उसकी प्रवृत्ति या इच्छा से उसे विमुख किया जा रहा है। हटाने वाले का अभीष्ट है 'यव'। अतएव वारणार्थक 'वारि' धातु के प्रयोग में वारणकर्ता के अभीष्ट 'यव' की उक्त सूत्र से अपादान संज्ञा होने पर पञ्चमी विभक्ति हुई। अब प्रश्न होता है — उक्त सूत्र में 'ईप्सित' क्यों कहा? उत्तर है — न कहने पर 'यवेभ्यो गाँ वारयति क्षेत्रे' (खेत में गाय को यवों से हटाता है) — इस वाक्य में 'क्षेत्र' की उक्त सूत्र से अपादान संज्ञा हो जायेगी। 'ईप्सित' कहने पर तो इसलिए नहीं होता कि यहाँ हटानेवाले की इच्छा 'जौ' बचाने की है न कि खेत बचाने की। अतः 'ईप्सित' अर्थ न होने से 'क्षेत्र' में अपादान संज्ञा - पंचमी विभक्ति न हुई, बल्कि आधार होने से अधिकरण संज्ञा सप्तमी हुई।

— 0 —